राहुल सांकृत्यायन के कथा–साहित्य में चित्रित बौद्ध दर्शन

लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, राजर्षी छत्रपती शाहू कॉलेज, कोल्हापूर,
rcpatilshahu@gmail.com

ज्ञान प्राप्ती के बाद गौतम बुद्ध ने दुनिया को अपने अनुभव से परिचित कराने का निर्यय लिया, ताकि जनता उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर मुक्ती प्राप्त कर सके। उनके धर्म प्रचार संबंधी निर्णय से बौद्ध धर्म की स्थापना हुई। महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश बनारस में सारनाथ नामक स्थान पर दिया। इस उपदेश से प्रभावित होकर उनके पाँचों ब्राह्मण साथी जो उन्हें भ्रष्ट समझकर तपस्या के समय उन्हें छोडकर चले गए थे वे उनके शिष्य बन गए। उनका यह भाषण 'धर्म–चक्र परिवर्तन' के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें बौद्ध धर्म का सार निहित है। इसके पश्चात वे काशी, राजगृह, कपिलावस्तु और उरूवेला आदि स्थानों में घूम-घूमकर अपने धर्म के सिद्धांतों का प्रचार करते रहे। मगध के शासक बिम्बसार और अजाताशत्रु, कौशल के शासक प्रसेनजित ने बुद्ध से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म को ग्रहण कर लिया। इसके अतिरिक्त उनके पिता शुद्धोधन, उनकी सौतेली माता प्रजापति, उनके पुत्र राहुल एवं वैशाली की सुप्रसिद्ध गणिका आम्रपाली आदि उनके अनुयायी बन गए। इस प्रकार धर्म का प्रचार करते हुए ८० वर्ष की आयु में ४८३ ई. पू. वैशाख मास की पूर्णिमा के दिन कुशीनगर (गोरखपुर) नामक स्थान पर उनका स्वर्गवास हुआ। बौद्ध धर्म में इस घटना को 'महापरिनिर्वाण' कहते हैं। उनके जीवन के संबंध में विशेष बात यह है कि वैशाख मास की पूर्णिमा के दिन उनका जन्म हुआ, इसी दिन उन्हें ज्ञान की प्राप्ती हुई और इसी दिन उन्होंने शरीर त्याग दिया। संसार के इतिहास में ऐसा उदाहरण किसी अन्य व्यक्ति के जीवन नहीं मिलता।

उनके अनुयायियों की दो श्रेणियाँ थी। पहली श्रेणी में बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणी आते थे और दुसरी श्रेणी में गृहस्थ थे, जो उपाशक एवं उपासिकायें कहलाते थे।आनंद सारिपुत्र, सुनिती, देवदत्त और अताथपिंडक आदि महात्मा बुद्ध के प्रमुख शिष्य थे। उनके जीवन काल में उनके अनुयायों का एक शक्तीशाली संघ बन गया था।

राहुल सांकृत्यायन के कथा–साहित्य में बौद्ध, हिंदू, आर्य, ईसाई, इस्लाम आदि विश्व के प्रमुख धर्मों का चित्र प्रस्तुत है। राहुल सांकृत्यायन बौद्ध मत से प्रभावित होने के कारण इनके कथा साहित्य में बौद्ध मत को प्रधान स्थान प्राप्त हो चुका है। कथा साहित्य में अनेक महत्वपूर्ण प्रसंगो के माध्यम से बौद्धमत का प्रसार करने का बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। राहुल सांकृत्यायन स्वयं अपने जीवन के अंत तक बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करते रहे। राहुल सांकृत्यायन के प्रमुख उपन्यासों में बौद्ध धर्म प्रचार-प्रसार की अधिकता दिखाई देती है। 'जय यौधेय' उपन्यास में सम्राट अशोक के बौद्ध धर्म प्रसार के कार्य को बताते हुए नायक जय के तात जय से कहते है, "भगवान ने निर्वाण के बाद उसकी शरीर –धातु (हड्डी) को बाँटकर, राजगृह, कुशीनगर, वैशाली, कपिलावस्तु, रामग्राम आदि स्थानों पर आठ नौ चैत्य बनाए गए थे। भगवान के निर्वाण के सवा दो सौ वर्ष बाद जब अशोक राजा हुए तो उन्होंने अपने राज्य के भिन्न –भिन्न स्थानों में सैकड़ों चैत्य निर्मित कराये और उनमें भगवान के शरीर-धातु को स्थापित किया। अशोक परम धार्मिक राजा थे। इसीलिए उनको धर्मराज अशोक भी कहा जाता था और उसी नाम के कारण ये चैत्य धर्मराजिका- चैत्य कहलाये।"[१] यहाँ लेखक भगवान बुद्ध की महत्ता तथा उनके धर्म प्रसार-प्रचार आदि बातों पर प्रकाश डालते हुए सम्राट अशोक जैसे राजाओं व्दारा बौद्ध धर्म का प्रसार करने की बात का चित्रण किया। यहाँ बौद्ध धर्म की महत्ता को सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है।

उपन्यास के अन्य एक प्रसंग में यवन, पारसीक, सक, मगध, विदर्भ, सैंहलक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र आदि सभी जातियों के प्रति बुद्ध धर्म के समानता की प्रवृत्ति का चित्र प्रस्तुत करते हुए उपन्यास में लिखते हैं, मैंने बुद्ध के उपदेशों में पढ़ा कि वह हर तरह के भेदभाव को हटाकर संघ में सभी को एक करना चाहते हैं।[२] राहुल सांकृत्यायन ने यहाँ पर बौद्ध धर्म का अन्य धर्मों के प्रति सर्व धर्म समभाव की प्रवृत्ति को दिखाया है। इसके माध्यम से वे समाज में स्थित भेदभाव को हटाकर पूरे संसार को एक संघ बनाने की बात करते है।

'मधुर स्वप्न' के एक प्रसंग में मित्रवर्मा और अजर्दगार मज्दक के संवादो को माध्यम बनाकर भगवान बुद्ध के महानता की एक घटना का एक चित्र प्रस्तुत किया है। माता माया देवी की मृत्यु के बाद मौसी प्रजापति गौतमी का दूध पीकर बड़ा होता है और एक दिन राज राजमहल छोड़कर चला जाता है। सिद्धार्थ भगवान गौतम बुद्ध बनने के पश्चात अपनी जन्म भूमि वापस लौटता है। उस समय प्रजापति अपने हाथ के काते- बुने वस्त्र को देना चाहती है। गौतम बुद्ध वस्त्र को न स्वीकारते हुए कहते है, "गौतकी, यह वस्त्र यदि मुझे दोगी, तो मुझे व्यक्ति को दान देने का पुण्य प्राप्त होगा और आदि संघ को दोगी तो सांघिक दान का। व्यक्ति चाहे कितनी भी बड़ा हो, किंतु वह संघ के बराबर नहीं हो सकता। इसलिए यदि तू महापुण्य की

भागिनी होना चाहती है तो इसे न दे, संघ को दान कर दें। इसी समय बुद्ध ने यह भी कहा था कि आज ही नहीं भविष्य काल में संघ चाहे अयोग्य व्यक्तियों से ही बना हो, तो भी उसकी महिमा मुझसे बड़ी होगी, क्योकि मै एक व्यक्ति-भर हूँ।"[३] यहाँ लेखक एक व्यक्ति का महत्व नही तो पूरे समाज के प्रति दृष्टिकोण तथा महत्ता का चित्रण करना रहा है। तुखारों की मदद से चीन में हुए बौद्ध धर्म के प्रसार को चित्रित किया है।

'सिह सेनापति' उपन्यास में नायक सिंह और भामा के वार्तालाप को बौद्ध धर्म का प्रसार का माध्यम बनाकर लिखते है, "श्रमण गौतम शरीर और मन के स्वास्थ्य को पसंद करते हैं, वह उसे सुखाने और मारने की बात नहीं पसंद करते।"[४] राहुल सांकृत्यायन ने 'सिंह सेनापति' में त्रिरत्नों पर भी प्रकाश डाला है। लोगों से गौतम बुद्ध धर्म के बारे में सुनने के पश्चात सेनापति सिंह भगवान गौतम बुद्ध से मिलता है। बौद्ध धर्म के बारे में लोगों से सुने हुए बातों को सच्चे रूप में देखते हुए बौद्ध धर्म का स्वीकार करने के दृढ संकल्प करता है।

'विस्मृत यात्री' उपन्यास में भी बौद्ध धर्म का प्रसार बहुत ही जोरों से हुआ दिखाई देता है। उपन्यास का नायक नरेंद्रयश बौद्ध धर्म का प्रसार करता है। वह कौशाम्बी, श्रीबस्ती, लुम्बिनी, कुशीनगर आदि बौद्ध तीर्थ स्थानों की यात्रा करता है। नरेंद्रयश सिर्फ भारत में ही बौद्ध धर्म का प्रसार नहीं करता चीन और सिंहल व्दीप में भी बौद्ध धर्म का प्रसार करता है। चीन में नरेंद्रयश के प्रयत्नों के फलस्वरूप स्थान–स्थान पर बौद्ध संघ स्थापित होते है। इससे प्रभावित होकर सुई वंश का सम्राट वेनती नरेंद्रयश को अपनी राजधानी छाँग-अन में बौद्ध ग्रंथो का अनुवाद करने के लिए बुलाने की घटना इतिहास सम्मिलित है।

उपन्यासों की अपेक्षा राहुल सांकृत्यायन की कहानियों में बौद्ध धर्म का प्रसार बहुत कम मात्रा में हुआ है। 'वोल्गा से गंगा' तथा 'बहुरंगी मधुपुरी' कहानी संग्रह की कुछ कहानियों की प्रसंगो के अतिरिक्त अन्य कहानियों में बौद्ध धर्म प्रसार से संबंधित बात न के बराबर दिखाई देती है। 'वोल्गा से गंगा' की संपूर्ण यौधेय' कहानी के एक प्रसंग में बौद्ध धर्म प्रसार की बात को छेड़ते हुए लिखते हैं, "इस तरह के पुरषों के देखने के सबसे अच्छे स्थान बौद्धों के बिहार (मठ) थे। मेरे मातुल-कुल के लोग बौद्ध थे और कितने ही नागर भिक्षु भी इन मठों में रहते थे, इसलिए मुझे अक्सर वहाँ जाना पड़ता था। पुस्तक की पढ़ाई समाप्त कर मैंने देशाहन व्दारा अपने ज्ञान को बढ़ाना चाहा, उसी वक्त मुझै पता लगा कि विदर्भ में अचिन्त्य (अजन्ता) बिहार नाम का एक बहुत प्रसिद्ध है, जहाँ संसार के सभी देशों के बौद्ध भिक्षु रहते हैं।"[५] इसके माध्यम से लेखक ने बौद्धों के धर्म प्रसार के साधनों में उनके मठों और मंदिरों का उपयोग करते हुए उनके महत्व को विशुद्ध रूप से प्रकाश में लाया है।

'बिसुन' कहानी में सामान्य जीवन छोड़कर बौद्ध भिक्षु बनकर जीवन जीनेवाले व्यक्ति का चित्र प्रस्तुत करते हुए लिखा है, "जिनके लिए बौद्ध धर्म ने भिक्षुणी बनने का रास्ता निकाल दिया है। हर घर में वहाँ दो-चार भिक्षुणियाँ मिल सकती हैं। कानम् में उन्होंने अपना एक अलग मठ बना लिया है, जिसमें वह सामूहिक और स्वावलंबी जीवन बिताती है, उन्हें न घरवालों और न गाँववालों की दया पर निर्भर रहने की आवश्यकता है। वह स्वयं खेतों में काम करती है, अपनी फसलों को बटोर लाती हैं। उनमें कुछ पूजा-पाठ भर के लिए पढ़ भी लेती हैं-श्रद्धालु तो सभी होती हैं। भिक्षु भी प्राय" हरेक घर में से एक दिखाई पड़ता हैं, उनमें से कितने ही विद्याध्ययन के लिए ल्हासातक की दौड़ लगाते हैं। यहाँ लेखक ने बहुरंगी मधुपुरी याने की मसुरी के पास पास के जन-जीवन में वहाँ के स्त्री और पुरुष, बौद्ध धर्म प्रचार-प्रसार में विद्याध्ययन के साथ अपनी जीविका की ओर भी ध्यान देते है।

राहुल सांकृत्यायन ने उपन्यासों में गौतम बुद्ध का जन्म तथा बौद्ध धर्म के प्रचार- प्रसार के साथ-साथ 'मध्यमार्ग' का चित्रण किया है। जिसमें भगवान बुद्ध के आत्मा विरोधी मंतव्य का चित्रण करते हुए लिखते हैं, "आत्मा नाम से जो धारणा अकर्मण्यता फैलती है, उसी को देखकर मैं कहता हूँ –आत्मा की दृष्टी-विचार-मिथ्या दृष्टी है; जो नित्य-ध्रुव की धारणा रखता है, वह क्यों जीवन को बदलने की कोशिश करेगा, वह सिर्फ भाग्यवादी, अकर्मण्यावादी ही हो सकता है।[६] लेखक ने यहाँ आत्मा के मिथ्या आड़बर और अकर्म प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है इस प्रकार के आत्मवादी लोग अपने भाग्यवादी खोखलेपण और अशिष्ठ प्रवृत्ति को प्रवृत्त करते दिखाई देते हैं।

'मध्यमार्ग' के संदर्भ में अच्छी तरह से जानने के पश्चात नायक सिंह भगवान बुद्ध की इस विचारधारा का समर्थन करते हैं। भगवान के बारे में उसने जो सुना था, उससें कहीं श्रेष्ठ उसने बुद्ध को पाया। वह बुद्ध-धर्म-संघ की शरण में गया।

संदर्भ संकेत

१) राहुल सांकृत्यायन, जय यौधेय, पृष्ठ २०.
२) वही, पृष्ठ, ४४,४५.
३) राहुल सांकृत्यायन, 'मधुर स्वप्न' पृष्ठ ८१.
४) राहुल सांकृत्यायन, 'वोल्गा से गंगा' पृष्ठ २३३,२३४.
५) राहुल सांकृत्यायन, 'बहुरंगी मधुपुरी' पृष्ठ २०४.
६) राहुल सांकृत्यायन, 'सेनापती' पृष्ठ १७०.